IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

जानकीजीवनम् महाकाव्य में रस विषयक अभिनव दृष्टि

डॉ सुमन जैन
व्याख्याता भारती कॉन्वेंट स्कूल श्री श्रीगंगानगर

क्रोंच वध से द्रवित हृदय की करुणा ही श्लोक बन गई। जानकी के विरह में कमलनयन की पीड़ा पाषणा को भी रूला दे। सीता राम का जीवन करुणा भूयिष्ठ ही रहा इसीलिए सीताराम चरित्र आधृत महाकाव्य, नाटक में अंगी रस करुण अथवा शान्त रस ही रहा, किन्तु जानकीजीवनम् महाकाव्य में रस की दृष्टि से यह नवीन उद्भावना है कि प्रधान रस श्रृंगार है।

सीताराम गरिमामय चरित्रों के अनुरूप ही मर्यादित श्रृंगार रस का मधुर आस्वादन प्राप्त होता है। सीताराम की हृदयस्थ रति का ऐसा प्राञ्जल चित्र उकेरा गया है कि सहृदयों को स्वतः ही रसराज श्रृंगार की अनुभूति हो जाती है।

आनन्दवर्धनाचार्य के अनुसार प्रबन्धों में अनेक रसों की योजना प्रसिद्ध होने पर भी उनके उत्कर्ष को चाहने वाले कवि को एक को ही अङ्गीरस बनाना चाहिए।[1]

काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से जानकीजीवनम् महाकाव्य में अङ्गीरस के रूप में रसराज श्रृंगार है। महाकाव्य में संयोग श्रृंगार का शिष्ट एवं विप्रलम्भ श्रृंगारका पूर्वराग, मान, करुण अवस्थाओं का सरस वर्णन है। परस्पर प्रणय है, किन्तु मुनिव्रत के कारण नायक–नायिका में सङ्गम का अभाव है, तत्पश्चात् अपहृता सीता राम के लिए अप्राप्य है अतएव रति का स्थायित्व होने पर भी अयोग श्रृंगार की स्थिति में उनका मिलन नहीं होने के कारण विप्रलम्भ श्रृंगार की अवस्थिति बनी रहती है। इस वियोगके पश्चात् राम–सीता के जीवन में संयोग की सुन्दर स्थिति बनती है एवं सदैव बनी रहने के कारण श्रृंगार की मधुर अनुभूति सहृदयों की होती है अतएव महाकाव्य का अङ्गीरस श्रृंगार एवं अङ्गरस के रूप में हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत शान्त रसों का अभिव्यञ्जन हुआ है।

---

1 प्रसिद्धेऽपि प्रबन्धानां नानारसनिबन्धने।
एकोरसोऽङ्गी कर्त्तव्यस्तेषा मुत्कर्षमिच्छता। ध्वन्यालोक 3/21

जानकीजीवनमृ महाकाव्य में शृंगार रस के संयोग एवं विप्रलम्भ दोनों ही प्रकारों का विवेचन प्रस्तुत है –

1. **संयोग शृंगार –** परस्पर अनुरक्त नायक–नायिका के दर्शन, स्पर्शन आदि द्वारा अनुभवगम्य शृंगार, संयोग की श्रेणी में आता है।[1] जानकीजीवनम् महाकाव्य में राम–सीता की हृदयस्थ प्रीति के अनुरूप उनका प्रणय व्यापार सहृदयों को रसास्वाद करवाता है। काम व्यापारों के रहस्यों से सर्वथा अपरिचित मुग्धा नायिका सीता के प्रसन्नमन रनिवास में संचरण करती हुई को छुपकर खड़े राम के द्वारा एकाएक ही आलिङि्गत कर चूम लिया जाता है। तत्क्षण सहृदयों को शृंगार की मधुरिम अनुभूति होती है –

अन्तः पुरप्रतोलीषु चरन्ती निभृतम्मुदा।
स्तम्भकोण निलीनेन प्रियेण गोपितात्मना।।
मुञ्चमुञ्चेति सव्रीडं भणन्ती मृदुवाचिकम्।
कदाचिच्च दृढ़ं बद्धवा भुजयोराशु चुम्बिता।।[2]

यहाँ नायिका सीता सम्मत रति का आलम्बन विभाव राम है तथा नायक सम्मत रति का आलम्बन विभाव सीता है, अन्तःपुर का एकान्त स्थल उद्दीपन विभाव है। दर्शन, आलिङ्गन, चुम्बन, मृदुवचन अनुभाव एवं रोमाञ्च, लज्जा व्यभिचारी भाव है।

महाकाव्य के नवम् सर्ग में राम–सीता रति का निर्व्याज सुन्दर चित्रण हुआ है।[3] मधुरवचन बोलने वाले प्रियतम राम के अनुनयवश संगमोत्सुक सकुचाई सीता का राम के अङ्क में पहुँचना एवं प्राणप्रिय राम के द्वारा की जाने वाली क्रीड़ाएँ सहृदयों को संभोग शृंगार रस से आप्यायित कर देती है –

कर्णामृतझरी कल्पं श्रुत्वा प्रियतमोदितम्।
निर्व्याजमधुरं रम्यं स्मरभावविवर्धनम्।।
शनैस्तदङ्कमासाद्य न किञ्चिदपि कुर्वती।
अमन्दानन्दसन्दोहं लेभे प्रियतमोद्यमैः।।[4]

इसी प्रकार सम्पूर्ण महाकाव्य में राम सीता के अनन्य अनुराग की प्रतीति सहृदयों को बनी ही रहती है।

---

[1] दर्शनस्पर्शनादीनिः निषेवेतेः विलासिनौ।
यत्रानुरक्तावन्योन्यं संभोगोऽयमुद्राहृतः।। साहित्यदर्पण 3/210

[2] जा.जी. – 9/48,49

[3] जा.जी. – 9/52,53,57,58,59,63

[4] जा.जी. – 9/63

2. **विप्रलम्भ श्रृंगार –** आचार्य विश्वनाथ के अनुसार विप्रलम्भ श्रृंगार रस है : यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपेति विप्रलम्भोऽसौ।[1] जानकीजीवनम् महाकाव्य में विप्रलम्भ श्रृंगार रस – (अ) पूर्वराग, (ब) मान (स) प्रवास, (द) करुण इन भेदों से चार प्रकार का है –

(अ) पूर्वराग – जानकीजीवनम् महाकाव्य में 'राघवानुराग' संज्ञक चतुर्थ सर्ग में सीता राम की पूर्वरागावस्था का अद्भुत चित्रण प्राप्त होता है –

लावण्य सिन्धु के मंथन से उद्भुत लक्ष्मीस्वरूपा गौरवदना सीता के सौन्दर्यादि गुणों का गुरु विश्वामित्र से श्रवण कर आकृष्ट चित्त वाले राम शैय्या पर गये किन्तु उस रात, क्षणभर के लिए भी शयन नहीं कर पाये। यथा द्रष्टव्य :

तस्यां रात्रौ मनसिजकथानायिकाऽऽकृष्टचेताः,
काकुत्स्थोऽसौ क्षणमपि दृशौमीलितुं नो शशाक।
स्मारं स्मारं जनकतनयां वीतनिद्र त्रियामां,
रामोऽनैषीत्कथमपि च तां सोदराद् गोपितात्मा।।[2]

इसी तरह सखियों के द्वारा राम के बारे में कथन – हे सखि! मेघ के समान नीलकलेवर वाले कन्दर्पोपम व्यक्तित्व दशरथि दर्शनीय है। मेघपरिगत चन्द्रमा के समान शोभाधाम चञ्चल केशकुन्तलों से श्री मण्डित उस आनन को यदि तुमने नहीं देखा तो तुम्हारे जीवन को ही धिक्कार है।[3] राम के गुणों के श्रवण से ही सीता के हृदय में रच–बस जाते हैं। वे अपने चारों ओर रघुनाथ की छवि का अनुभव करने लगती हैं और साक्षात् दर्शन को पहुंच जाती है।[4]

महाकाव्य में 'पूर्वराग' संज्ञक षष्ठ सर्ग में अत्यन्त सरसता से राम–सीता की पूर्वरागावस्था का वर्णन प्राप्त होता है। यथा –

कनक चम्पक गुल्मगृहात्ततो रघुपतिस्स्वयमेव बहिश्चरः।
जनकजामुखचन्द्र चकोरतां विशदयन्ददृशे सहसोन्मुखः।।[5]

(ब) मान – कोपमूलक विप्रलम्भ मान कहलाता है। जानकीजीवनम् में प्रणयमान का चारु निरूपण है। नदी तट पर मृगशावकों से क्रीड़ाएं करते जानकी को विलम्ब हो जाने पर राघव

[1] सा.द. – 3/186
[2] जा.जी. – 4/46
[3] जा.जी. – 6/34
[4] जा.जी. – 6/45
[5] जा.जी. – 6/46,49

को किञ्चित रूठा हुआ देखकर अपने प्रणय–व्यवहारों से मनाती हुई अत्यधिक माधुर्य की सृष्टि करती है।[1]

स्वामी! देखिए ना! आपके लिए मैं यह कोमल सुरभि वाला कमल पुष्प ले आयी हूँ। 'इसे ले लीजिए न' इस प्रकार की मिठास भरी वाणी बोलती हुई मैथिली प्रियतम के कर्णमूल तक पहुंचकर, अपने स्पर्शजन्य सुख से विनम्र बनाया करती।[2]

(स) प्रवास – जानकीजीवनम् महाकाव्य में 'सम्भ्रम प्रवास' नामक विप्रलम्भ श्रृंगार है। रावण द्वारा अपहृत सीता राम से अलग कर दी गई। वियोगी राम को सम्पूर्ण प्रकृति ही जानकीमय दिखाई देती है। वे पाषाणशिला पर मैनसिल के रंग से सीता की आकृति बनाते हैं। यह उनके प्रगाढ़ प्रेम का परिचायक है।

निर्माय रूपं क्वचिदशमपट्टे मनश्शिलाभिर्नुतुतोष कामम्।
च्युताश्रुभिः प्रोञ्छितशैलतल्पे प्राणेश्वरी स्वामसकृल्लिलेख।।[3]

(द) करुण विप्रलम्भ – जहाँ वियोग है, परन्तु मिलन की आशा है, स्थायी भाव रति होने के कारण करुण विप्रलम्भ श्रृंगार होता है। महाकाव्य में सीता राम की मायावी मृत्यु देखकर विलाप करती है परन्तु त्रिजटा ने कहा – हे शुभे मैथिली! रोओ मत! राम मूर्छित हुए हैं।

यहाँ राम के जीवित होने का ज्ञान करुण विप्रलम्भ की कोटि में ही आता है।

महाकाव्य में संयोग श्रृंगार एवं पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, विप्रलम्भ श्रृंगार का समुचित शोभन प्रयोग सहृदयों के चित्त को श्रृंगार रस से आप्यायित कर जाता है। परिवर्तित कथानक में सीता–निर्वासन को दर्शाया ही नहीं गया, जानकी के जीवन में वह करुण क्षण घटित ही नहीं हुआ। आद्यन्त राम–सीता का उदात्त एवं प्रकृष्ट प्रेम ही महाकाव्य में अभिव्यंजित हुआ है अतएव श्रृङ्गार रस का अङ्गीरस के रूप में समावेश औचित्यपूर्ण ही कहा जा सकता है।

महाकाव्य में अङ्गरस के रूप में हास्यरस का सम्मिश्रण श्रृङ्गार को समधिक मधुर बनाने में सहायक रहा है।

मर्यादित राम के जीवन में श्रृंगार एवं हास्य का सृजन करना महाकाव्य की अभिनव सृष्टि है। राम का प्रिया से विनोदपूर्ण कथन। नवम् सर्ग में देवर–भाभी, देवर–देवरानियों के परस्पर

[1] जा.जी. – 11/8
[2] जा.जी. – 11/9
[3] जा.जी. – 13/22

हास–परिहास नूतन प्रयोग हैं।[1] देवर भाभी का महाकाव्य में फागोत्सव बनाना, मिथिला के लोकगीतों का समावेश, धमा चौकड़ी मचाना जन–जीवन में व्याप्त उल्लास, विनोद एवं हास्य का सहृदयों को आनन्द से सराबोर कर जाता है।

निष्कर्षतः रस सन्निवेश की दृष्टि से 'जानकीजीवनम्' नवरस रुचिर श्रेष्ठ कोटि का महाकाव्य है। जानकी प्रधान इस महाकाव्य में शृंगार रस का अङ्गीरस के रूप में समावेश निस्संदेह चमत्कृत कर देने वाला है। कवि की क्रान्त दृष्टि ने रूढ़ धारणा को तोड़ डाला, सीताराम के जीवन में शृंगार, हास्य रस की शोभन संयोजना कर डाली।

महाकाव्य में यथास्थल सभी रसों का रुचिर समावेश हुआ है। वीर, करुण, अद्भुत, भयानक, रौद्र एवं शान्त रसों के अभिव्यंजन से अलौकिक आनन्द प्रदान करने में महाकाव्य पूर्ण सफल रहा है। महाकाव्य मधुर, रसमसृण एवं भावविभोर कर देने वाला है।

[1] जा.जी. – 9/73,74,77